चिन्मय विद्यालय, नई दिल्ली
अभ्युत्कर्ष
७
हिंदी ई-समाचार पत्र २०२४
हिंदी विभाग

प्राचार्या का संदेश

अर्चना सोनी

सत्र 2024-25 की ई-पत्रिकाओं की श्रृंखलाओं की पहली कड़ी यह हिन्दी-ई पत्रिका अभ्युत्कर्ष अवश्य ही हिंदी भाषा के उत्कर्ष को प्रतिबिंबित करती है। छात्रों के लेखन कौशल विभागीय गतिविधियों तथा सृजनात्मकता के साथ - साथ गत माह की विशेष उपलब्धियों को दर्शाने का यह उद्यम सराहनीय है। भविष्य में भी इसी प्रकार के पहल' की अभिलाषा के साथ विभाग को साधुवाद एवं अनेकानेक शुभाशीष।

संपादकीय

विभाग अध्यक्षा
रिनी गुलाटी

हिंदी हमारी राजभाषा है। यह भाषा है हमारे सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की। विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है 'हिंदी'। हमारी भाषा, हमारे देश की संस्कृति एवं संस्कारों का प्रतिबिंब हैं । नई शिक्षा नीति में जिस प्रकार से प्राथमिक तौर पर मातृभाषा के प्रभाव को समायोजित करते हुए हिंदी भाषा के महत्व को भी सम्मिलित किया गया है,वह हिंदी के प्रभुत्व को स्थापित करते हुए भविष्य में हिंदी युग की स्थापना का कारक अवश्य बनेगा। चिन्मय विद्यालय हिंदी विभाग की यह पत्रिका 'हिंदी भाषा' के महत्व, उसकी विपुलता एवं उसके 'उत्कर्ष' को उजागर करने का एक प्रयास मात्र है । आशा है आप सभी इसे आत्मसात् कर गौरवान्वित तथा आनंदित अवश्य होंगे।

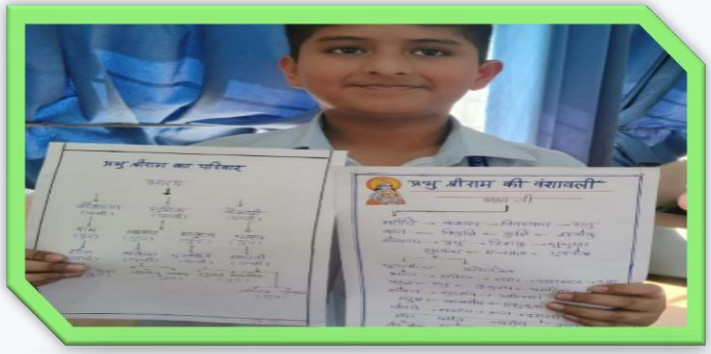

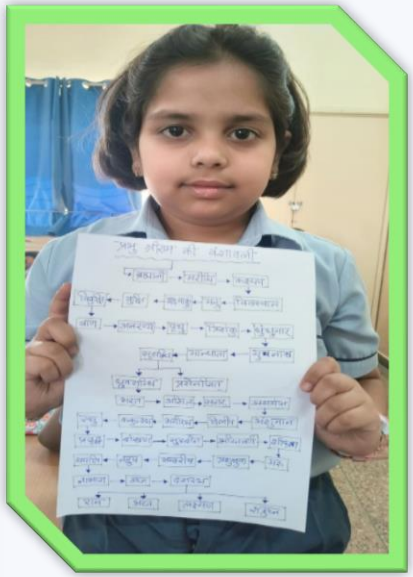

साहित्य अकादमी पुरस्कार

साहित्य

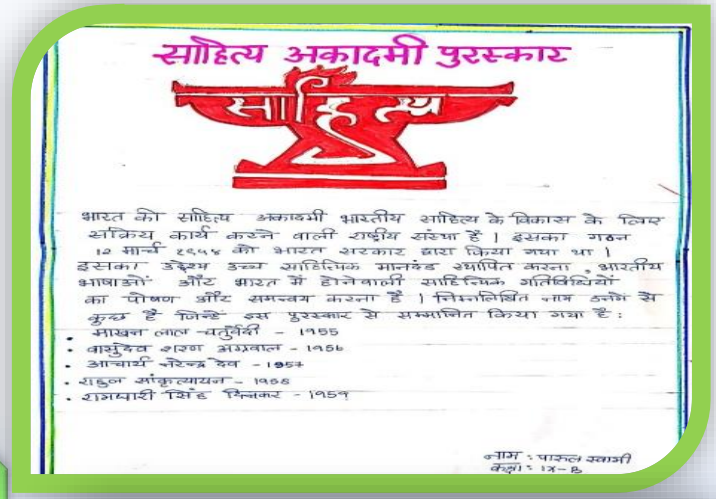

भारत की साहित्य अकादमी भारतीय साहित्य के विकास के लिए सक्रिय कार्य करने वाली राष्ट्रीय संस्था है। इसका गठन १२ मार्च १९५४ को भारत सरकार द्वारा किया गया था। इसका उद्देश्य उच्च साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं और भारत में होनेवाली साहित्यिक गतिविधियों का पोषण और समन्वय करना है। निम्नलिखित नाम उनमें से कुछ है जिन्हें इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया है :

- माखन लाल चतुर्वेदी - 1955
- वासुदेव शरण अग्रवाल - 1956
- आचार्य नरेन्द्र देव - 1957
- राहुल सांकृत्यायन - 1958
- रामधारी सिंह दिनकर - 1959

नाम : पारुल स्वामी
कक्षा : IX-B

क ख ग

मेरी भाषा मेरी पहचान

विद्यालय के हिंदी विभाग व विद्यार्थियों का सराहनीय प्रयास प्रदर्शित करता है, हिंदी भाषा के प्रति सम्मान तथा छात्र छात्राओं का उत्साह ।

अ ई ए

पुरस्कृत छात्र

भारतीय विद्याभवन मेहता विद्यालय में आयोजित कविता वाचन प्रतियोगिता में कक्षा सातवीं के छात्र सेतुनाथ ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
हृदय की गहराईयों से शुभकामनाएँ...

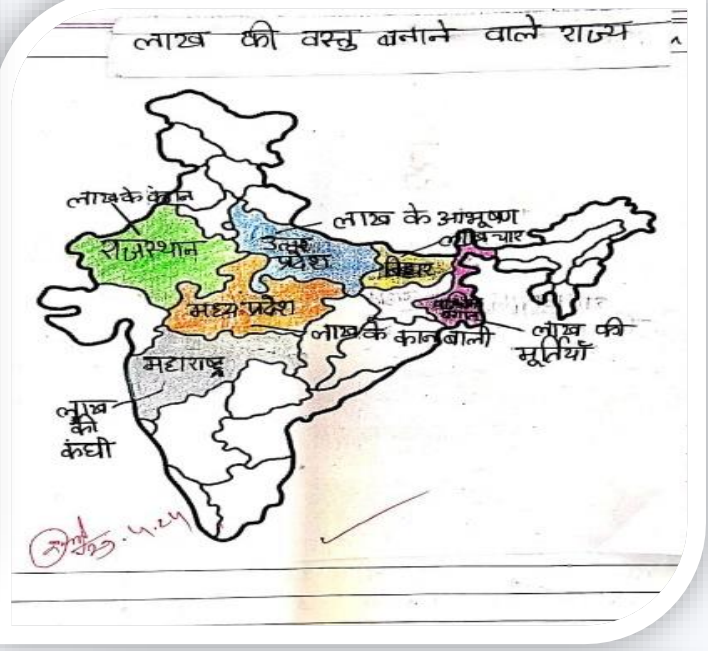

अन्तर्विषयी गतिविधि

अन्तर्विषयी गतिविधियों में विद्यार्थियों ने विशेष रुचि दिखाते हुए हिंदी विषय के पाठों को भारतीय मानचित्र से जोड़ते हुए बहुत ही रोमांचक अध्ययन किया।

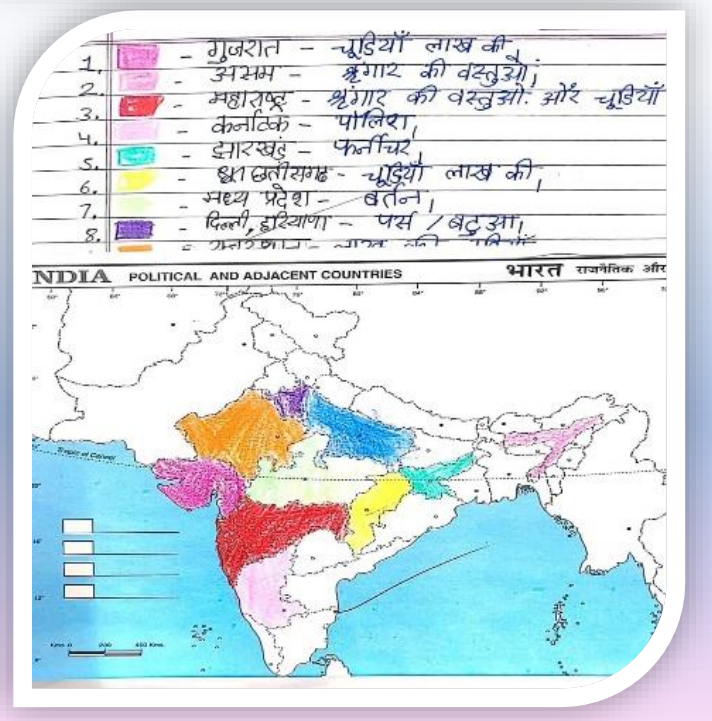

विद्यालय के उभरते लेखक...

देश के प्रति हमारा कर्तव्य -

देश हमारी मातृभूमि अर्थात् वह भूमि जहाँ हमने जन्म लिया। इस भूमि के लिए हमने क्या किया? हमारा कर्तव्य है कि हम इसकी सेवा अपनी जन्मदात्री माता की तरह करें इस मातृभूमि के लिए हमारे कुछ कर्तव्य भी हैं: प्रथम कर्तव्य ये है कि हम इसे अपने प्राणो से भी ज्यादा प्यार करें, इसकी स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें जैसा कि हम अपने घरों के लिए करते हैं।दूसरा, इस सरज़मीं के संविधान का पालन करें और उसके आदर्शों और संस्थानों, राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का सम्मान करें। तीसरा, भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता को बनाए रखें और उसकी रक्षा करें । चौथा, वनों, झीलों, नदियों और वन्य जीवन सहित प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा, सुधार करें और प्राणियों के प्रति दया भाव रखें।पाँचवा, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करें और हिंसा का त्याग करना।जंगलों, झीलों, नदियों और वन्य जीवों सहित प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करें । प्राणियों के प्रति दया भाव रखना ही हमारा कर्तव्य होना चाहिए।
धन्यवाद

- श्रेयश लोशाली
आठवीं 'स'

छात्रों का कर्तव्य-

किसी देश के युवाओं को आने वाली पीढ़ी के लिए ईंधन कहा जाता है, जिनके कंधों पर देश का भविष्य निर्भर करता है। भारत के आधे से अधिक युवा 14 से 18 वर्ष के बीच हैं अर्थात स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ते हैं। इसलिए छात्रों को कुछ कर्तव्यों का पालन करना पड़ता है जो उनके समग्र विकास में मदद करेगा। इन कर्तव्यों को पूरा करने से वे समाज के लिए एक बेहतर इंसान बनेंगे। छात्र को न केवल शिक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त करनी चाहिए बल्कि समाज के उत्थान और बेहतरी में भी सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए। छात्रों को न केवल उत्कृष्टता के लिए प्रयास करना चाहिए बल्कि अपने व्यक्तित्व विकास पर भी ध्यान देना चाहि। एक छात्र को उन व्यक्तियों का सम्मान करना चाहिए जो राष्ट्र के युवाओं के लिए मार्गदर्शक शक्ति के रूप में सेवा कर रहे हैं। इसलिए एक छात्र को हमेशा अपने शिक्षकों के साथ सम्मान और गरिमा के साथ व्यवहार करना चाहिए। एक आदर्श छात्र कभी भी अपने साथियों के बीच भेदभाव नहीं करता है और उनके साथ समान व्यवहार करता है। एक विकसित मस्तिष्क और मानसिकता एक अनुशासित व्यक्तित्व में होती है, इसलिए अनुशासित रहना छात्र जीवन का प्रमुख कारक है। एक छात्र के जीवन का एक मुख्य पहलू सीखने के लिए उत्सुक और तैयार रहना है और उस सीख से प्राप्त ज्ञान और बुद्धिमत्ता को अपने जीवन में लाना है। ऐसे कर्तव्यों का पालन करके एक विद्यार्थी वह आदर्श युवा बन सकता है जो एक देश चाहता है।

-ऋत्विक
आठवी 'स'

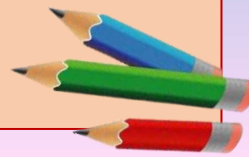

कर्तव्यों का पालन

कर्तव्य क्या है? सामान्य शब्दों में , कर्तव्य उन नैतिक दायित्वों को दर्शाता है जो व्यक्तियों के अपने, अपने परिवार और व्यापक दुनिया के प्रति होते हैं। अधिक विस्तार में कर्तव्य मानव सभ्यता के ढाँचे में गहराई से रची एक अवधारणा है, जो व्यक्तियों और समाज को नैतिक अखंडता की ओर मार्गदर्शन करती है। लेकिन हम इस कथन को कैसे उचित ठहरा सकते हैं? क्या कर्तव्य में सचमुच जीवन व्यवस्था को संतुलित करने की शक्ति है? क्या हम अपने कर्तव्य का पालन करते हैं क्योंकि सभी लोग ऐसा करते हैं और हम अपने जीवन में इसके महत्व से अनजान हैं? जीवन के प्रत्येक चरण में व्यक्ति के एक या अधिक कर्तव्य हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, स्कूल में पढ़ने वाले एक बच्चे का कर्तव्य शिक्षा में अच्छा प्रदर्शन करना है और भविष्य के लिए अपने विकास पर ध्यान केंद्रित करना और योजना बनाना है। माता-पिता का कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों का पालन-पोषण करें और उन्हें अपने साथ सुरक्षित महसूस कराएँ, जबकि बदले में बच्चों का भी कर्तव्य है कि वे बुढ़ापे में अपने माता-पिता का सम्मान करें और उनकी देखभाल करें। ये पारस्परिक कर्तव्य पारिवारिक संबंधों की नींव तैयार करता है। व्यवसायों के क्षेत्र में, व्यक्तियों को विशिष्ट कर्तव्य सौंपे जाते हैं। डॉक्टरों को अपने मरीज की देखभाल करने का कर्तव्य दिया गया है, जबकि शिक्षकों को अपने छात्रों के बौद्धिक और नैतिक विकास का पोषण करने का काम सौंपा गया है। समाज में मनुष्य को कानूनों का पालन करना , उनके प्रतिनिधियों के लिए वोट करना और करों का भुगतान करना कर्तव्य के कुछ उदाहरण हैं। लेकिन ऐसे तमाम उदाहरणों से गुजरने के बाद भी हमने कर्तव्य के महत्व पर बात नहीं की है। मान लेते हैं कि उपरोक्त उदाहरणों में, बच्चे अपने माता-पिता के खिलाफ विद्रोह करना शुरू कर देते हैं, बदले में माता-पिता अपने बच्चों को सही रास्ता दिखाने के बजाए उन्हें खिलाने से इनकार कर देते हैं, डॉक्टर पैसे के बल पर मरीजों का इलाज करने लगते हैं, शिक्षक आलस्य के कारण पढ़ाने से मना कर देते हैं व लोग टैक्स नहीं देते जिसके कारण देश अविकसित रह जाता है। यदि हम ऐसी भयावह घटनाओं को वास्तविकता में घटित होने पर विचार करें तो अपने कर्तव्यों का पालन करना अधिक बेहतर प्रतीत होता है क्योंकि दार्शनिक और धार्मिक, दृष्टियों से मानवता का अस्तित्व जीवन में अपने अलग-अलग उद्देश्यों की पूर्ति करके विश्व के संतुलन और प्रगति की व्यवस्था को बनाए रखने के लिए ही हमारे पास अपने अलग-अलग उद्देश्य अर्थात् कर्तव्य हैं।अतः हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि कर्तव्य वह सूत्र है जो समाज को नैतिकता की व्यवस्था में बाँधता है।

-आहाना सिंह रावत
IX-'अ '

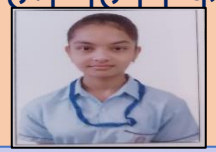

लिंगों की मदमदाती दुनिया..

काका से कहने लगे ठाकुर ठर्रा सिंग,
दाढ़ी स्त्रीलिंग है, ब्लाउज़ है पुल्लिंग।
कह काका कवि पुरूष वर्ग की किस्मत खोटी
मिसरानी का जूड़ा, मिसरा जी की चोटी।
दुल्हन का सिन्दूर से शोभित हुआ ललाट,
दूल्हा जी के तिलक को रोली हुई अलॉट।
रोली हुई अलॉट, टॉप्स, लॉकेट, दस्ताने,
छल्ला, बिछुआ, हार, नाम सब हैं मर्दाने।
पढ़ी लिखी या अपढ़ देवियाँ पहने बाला,
स्त्रीलिंग जंजीर गले लटकाते लाला।
लाली जी के सामने लाला पकड़ें कान,
उनका घर पुल्लिंग है, स्त्रीलिंग है दुकान।
स्त्रीलिंग दुकान, नाम सब किसने छाँटे,
काजल, पाउडर, हैं पुल्लिंग नाक के काँटे।

कह काका कवि धन्य विधाता भेद न जाना,
मूँछ मर्दों को मिली, किन्तु है नाम जनाना।
ऐसी-ऐसी सैंकड़ों अपने पास मिसाल,
काकी जी का मायका, काका की ससुराल।
काका की ससुराल, बचाओ कृष्णमुरारी,
उनका बेलन देख कांपती छड़ी हमारी।
कैसे जीत सकेंगे उनसे करके झगड़ा,
अपनी चिमटी से उनका चिमटा है तगड़ा।
मंत्री, संतरी, विधायक सभी शब्द पुल्लिंग
तो भारत सरकार फिर क्यों है स्त्रीलिंग?
क्यों है स्त्रीलिंग, समझ में बात ना आती,
नब्बे प्रतिशत मर्द, किन्तु संसद कहलाती।
काका बस में चढ़े हो गए नर से नारी,
कंडक्टर ने कहा आ गयी एक सवारी।

जीभ घुमाओ बोलकर दिखाओ..

1.समझ समझ के समझ को समझो,
समझ समझना भी एक समझ है ।

2.चार कचरी कच्चे चाचा, चार कचरी पक्के,
पक्की कचरी कच्चे चाचा, कच्ची कचरी पक्के।

3.जो जो को खोजो खोजो जोजो को,
जो जोजो को ना खोजो , तो खो जाए जोजो ।

4. **राजा गोप गुपग्गम दास।**

5. ऊँट ऊँचा, ऊँट की पीठ ऊँची,
ऊँची पूँछ ऊँट की।

गणतंत्र भारत को जानें,अंतर खोजो तो मानें।

भारत के 28 राज्यों के नाम खोजिये

दिशा निर्देश → ↓ ↘ ↙

मे	प	आ	हि	छ	गु	ओ	डि	शा	अ	स	म
घा	म	न्ध्र	मा	त्ती	ज	क	र्ना	ट	क	प	अ
ल	ध्य	प्र	च	स	र	रा	ते	ल	गा	ना	रू
य	प्र	दे	ल	ग	त	उ	ज	ह	रि	या	णा
त	दे	श	प्र	ढ़	बि	त्त	त्त	स्था	झा	पं	च
मि	श	म	दे	म	हा	रा	ष्ट्र	र	न	जा	ल
ल	त्रि	णि	श	श	र	ख	ख	के	प्र	ब	प्र
ना	र	पु	ना	गा	लै	ण्ड	गो	वा	र	दे	दे
ड्ड	ल	र	रा	प	श्चि	म	बं	गा	ल	ल	श

शब्दगोल

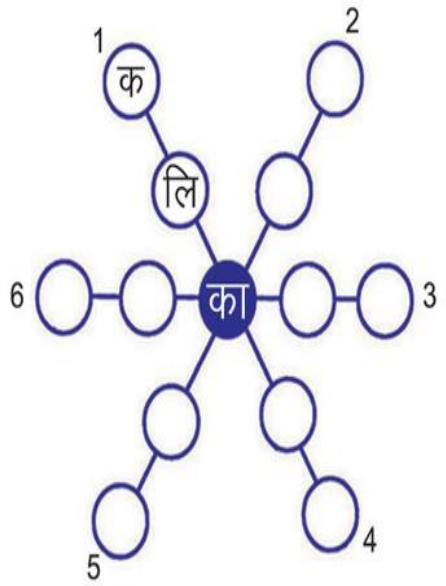

संकेत

1. बिना, खिला हुआ फूल।
2. नायक का स्त्री रूप।
3. बच्ची, छोटी लड़की।
4. साहित्य की एक प्रसिद्ध पत्रिका।
5. क्षेत्र।
6. खेत में खड़ा पुतला।

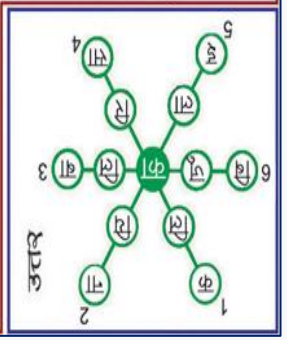

बढ़ताक्रम

संकेत

1. जिस, किसी को जाने के लिए कहना.
2. जीवन प्राण, परिचय.
3. राजा जनक की पुत्री.
4. सजीव, जीवधारी.
5. मजेदार, लज़ीज.
6. जानते या समझते हुए.

1.	जा					
2.	जा					
3.	जा					
4.	जा					
5.	जा					
6.	जा					

उत्तर: 1. जा, 2. जान, 3. जानकी, 4. जानदार, 5. जानदार, 6. जानकार।

SCAN ME

विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों को देखने के लिए QR code को स्कैन करें।